साहित्य पुनरावलोकन:

01) भारत में पंचायती राज:

डॉ. के. के. शर्मा लिखित किताब 'भारत में पंचायती राज' जिसमें भारत के पंचायती राज, स्वतंत्र भारत में पंचायती राज और महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज के दृष्टि को दर्शाया है। पंचायती राज का ग्रामीण स्थानीय सरकार में उसका स्वरूप भी दर्शाया है। भारत में लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण का सजीव एवं साकार स्वरूप पंचायती राज व्यवस्था स्वतंत्रा के पश्चच्यात ही दृष्टिगोचर हुआ, लेकिन इसकी परिकल्पना स्वतंत्र भारत कि उपज नहीं है। पंचायती राज की परिकल्पना , स्वरूप एवं उसके माध्यम से ग्रामीण विकास की अवधारणा आजकल कि बात नहीं अपितु इसका इतिहास वैदिक कल से भी पूर्व का है। भारत के प्राचीन इतिहास कि पृष्ठभूमि के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि वैदिक काल में भी पंचायती राज का अस्तित्व था। तत्कालीन कार्य पंचायतों के माध्यम से राज कार्य संभालता था। उस समय ग्राम का प्रमुख ग्रामिनी होता था। बौद्ध काल में भी ग्रामपरिषदें थी। मौर्य काल में भी पंचायते थी,चंद्रगुप्त मौर्य के काल में ग्रामीण लोग पंचायतों में रुचि लिया करते थे। तत्कालीन राजनीति शास्त्र के ज्ञाता चाणक्य ग्राम को राजनीति के इकाई के रूप में स्वीकार करते थे। यही पंचायती राज की अवधारणा स्वतन्त्रता के बाद भारत में नए स्वरूप में आपनाई गयी।

02) पंचायती राज व्यवस्था

डॉ. गौतम वीर द्वारा लिखित 'पंचायती राज व्यवस्था' में पंचायत राज का भारत में पूर्व इतिहास बताया है। भारत और पंचायती राज का सम्बन्ध दर्शाया गया है जिससे यह पता चलता है की प्राचीन भारत में स्थानीय सरकार संबंधी विषय का बहुत अधिक महत्व है। बलवंतराय मेहता समिति ने तीन स्तरीय (जिला परिषद, पंचायत समिति और ग्रामपंचायत) पंचायती राज का सुझाव दिया था। पंचायती राज संरचना में ग्राम पंचायत निम्नतम इकाई है। ग्रामसभा में गाँव के सभी प्रौढ़ होते हैं। ग्रामसभा वह मूल इकाई है जिसके प्रति ग्राम पंचायत उत्तरदायी है।

03) गाँधी का राजनैतिक चिंतन

डॉ. एम.के. मिश्रा – डॉ. कमल दाधीच लिखित यह किताब मे गांधी दर्शन में ग्राम-स्वराज की अवधारणा को दर्शाया गया है। वर्तमान समय में सूचना प्राद्योगिकी के क्षेत्र में आयी तीव्र क्रांति के कारण 'वैश्विक गाँव' की अवधारणा का सूत्रपात हुआ है। ऐसी स्थिति में गांधीजी की ग्राम स्वराज की परिकल्पना अधिक उपयोगी प्रतीत होती है। ग्राम स्वराज की क्रियान्विति के माध्यम से गांधीजी 'वसूधैव कुटुम्बकम ' के आदर्श को व्यावहारिकता प्रदान करना चाहते थे। 'वसूधैव कुटुम्बकम' की अवधारणा भारत के लिए नई नहीं है।, बल्कि शताब्दियों पूर्व ऋषियों, चिंतकों एंव विचारकों ने मानव जाति को इस आदर्श की प्राप्ति के लिए सचेत किया था।

गांधीजी ने जिस ग्राम स्वराज की परिकल्पना की है, वह पुरानी वैदिक कालीन ग्राम पंचायतों का पुनर्जीवन नहीं है अपितु नवीन परिवर्तित परिवेश एंव ग्रामों का पुनर्जीवन करना है और उन्हें स्वायत शासन की एक इकाई के रूप में स्थापित करना है ताकि वे पूर्णरूप आत्मनिर्भर बन सके। ग्राम-स्वराज की गांधीजी की परिकल्पना इस प्रकार है। ग्राम-स्वराज की मेरी कल्पना यह है की वह ऐसा पूर्ण प्रजातंत्र होगा, जो अपनी महत्व की जरूरतों के लिए अपने पड़ौसी पर निर्भर नहीं रहेगा, और फिर भी बहुतेक दूसरी जरूरतों के लिए जिसमें दूसरों का सहयोग अनिवार्य होगा वह परस्पर सहयोग से काम लेगा।

04) भारत में पंचायती राज व्यवस्था:

मुन्नी पडलियाजी ने अपनी किताब में लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था की महतत्ता को उजागर किया है। लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था भारत की प्रमुख विशेषता है। लोकतन्त्र का स्पष्ट अर्थ जनता की समस्याओं और उनके समाधान की प्रक्रिया में जनता का प्रत्यक्ष भागीदारी होती है। लोकतंत्र की सर्वश्रेष्ठ सफलता स्थानीय स्वायत्त शासन का संचालन है। भारत में लोकतन्त्र की संप्रभुता का प्रवाह उपर से नीचे की ओर होने के लिए पंचायत राज व्यवस्था का स्वीकार किया गया। पंचायती राज व्यवस्था में ग्राम, तालुका और जिला आते है। भारत में प्राचीन कल से ही पंचायती राज व्यवस्था अस्तित्व में रही है ।

05) ग्राम सुधार:

शिवपुजन सहाय लिखित इस किताब में गांवों के महत्व को दर्शाया गया है। भारत वर्ष 'गावों का देश' कहलाता है। गाँव ही हमारे राष्ट्र की रीढ़ है। वही हमारे अन्नदाता है। किसान और मजदूर वही रहते है। हमारे पशुधन का खजाना भी वहीं है। हमारा अन्न और दूध-घी का भंडार तो वही है, कपड़े बनाने के सब समान भी हम वही से पातें है। सुख के सारे समान हमे वही से मिलते है। शहरों में और बड़े-बड़े कारखानों से हमारे काम की जितनी चीजें तैयार होती है, सबके लिए कच्चा माल वहीं से आता है। ऐसे में ग्रामस्वराज कि अवधारणा को को गाँव मे लाना और ऐसे स्वयंपूर्ण ग्रामों को तैयार को यहा दर्शाया है।

06) स्वराज अभियान:

गांधीजी स्वराज के संदर्भ में कहते हैं कि, स्वराज का मेरे लिए क्या अर्थ है-

मुझे भारत को केवल अंग्रेजों की पराधीनता से ही मुक्त कराने में दिलचस्पी नहीं है। मैं भारत को सभी प्रकार की पराधीनताओं से मुक्त कराने के लिए कटिबद्ध हूं। मुझे एक शासक के स्थान पर दूसरे शासक को लाने की जरा भी इच्छा नहीं है।

सच्चा स्वराज मुट्ठी भर लोगों के द्वारा सत्ता प्राप्ति से नहीं आएगा, बल्कि सत्ता का दुरूपयोग किए जाने की सूरत में, उसका प्रतिरोध् करने की जनता की सामर्थ्य विकसित होने से आएगा।

स्वराज का अर्थ है सरकार के नियंत्रण से मुक्त होने का सतत प्रयास, यह सरकार विदेशी हो अथवा राष्ट्रीय।

07) महात्मा गांधी की ग्राम स्वराज की अवधारणा: एक विवेचन:

शब्द ब्रह्म शोध पत्रिका में महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज की अवधारणा का विवेचन किया गया है भारत गावों का देश है । इसकी ग्रामीण संस्कृति प्राचीनतम है । दुनिया में अनेक संस्कृतियों के बीच भारतीय संस्कृति की अलग ही पहचान है । गाँव सामुदायिक जीवन का श्रेष्ठ उदाहरण है । वेदों का मंत्र है 'विश्वं पुष्टे ग्रामें अस्मिन

अनातुरम' अर्थात मेरे गाँव में परिपुष्ट विश्व का दर्शन होना चाहिए। यह दर्शन बिना स्वराज के नहीं हो सकता। महात्मा गांधी की ग्राम स्वराज अवधारणा वैदिक विचारों का ही विस्तार है।

http://shabdbrahamlcom/ShabdB/archive/v2i9/sbd-V2-i9-sn2lpdf

17 जुलाई 2014

08) भारत में पंचायत राज :

अंजलि वर्मा द्वारा रचित पुस्तक 'भारत में पंचायती राज' में पंचायती राज के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को साथ ही भारतीय संविधान में पंचायती राज के महत्व को दर्शाया है। महात्मा गांधी ने कहा था कि यदि गाँव नष्ट होते है तो भारत नष्ट हो जाएगा इसी संदर्भ में भूतपूर्व प्रधान मंत्री चौधरी चरण सिंह ने भी कहा था कि भारत की प्रगति और उन्नति का रास्ता गाँवों से होकर जाता है। भारतीय संविधान के निर्माता भी इस तथ्य को जानते थे कि गाँव का उद्धार किए बगैर भारत का उद्धार नहीं किया जा सकता इसलिए उन्होंने गांवों का विकास करने के लिए कई प्रावधान किए थे। इन्हीं में से एक प्रावधान था गाँव के लोगों द्वारा शासन अर्थात पंचायती राज।

9) **ग्राम स्वराज्य:**

महात्मा गाँधी द्वारा लिखित किताब 'ग्रामस्वराज्य' में गांधीजी देश में स्वराज्य लाने की बात करते हैं। गांधीजी आरंभ से ही इस बात पर बड़ा जोर देते थे कि भारत के गाँवों में ग्रामपंचायतों को पुनर्जीवन प्रदान करके हमारे देश में ग्राम स्वराज्य की स्थापना की जाये। उनका यह दृढ़ विश्वास था कि जब तक भारत के लाखों गाँव स्वतंत्र शक्तिशाली और स्वावलंबी बनकर उसके संपूर्ण जीवन में पूरा भाग नहीं लेते, तब तक भारत का भविष्य उज्वल नहीं हो सकता।

गांधीजी चाहते थे कि भारत में सच्चे लोकतंत्र की स्थापना हो। इसलिए उन्होंने कहा था: "सच्चा लोकतंत्र केंद्र में बैठे हुए बीस व्यक्तियों द्वारा नहीं चलाया जा सकता। उसे प्रत्येक गाँव के लोगों को नीचे से चलाना होगा"। ग्राम स्वराज्य में गाँव संपूर्ण सत्ताये भोगने वाला एक विकेंद्रित राजनीतिक घटक होगा, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का

सरकार शासन में सीधा हाथ होगा। व्यक्ति अपने सरकार का निर्माता होगा। ग्रामस्वराज्य में अंतिम सत्ता व्यक्ति के हाथ में रहेगी।

ग्रामस्वराज्य के बुनियादी सिद्धांत में गांधीजी लिखते हैं कि, मेरी राय में भारत की- न सिर्फ भारत की बल्कि सारी दुनिया की अर्थ रचना ऐसी होनी चाहिए, जिसमें किसी को भी अन्न और वस्त्र के अभाव की तकलीफ न सहनी पड़े। दूसरे शब्दों में हर एक को इतना काम अवश्य मिल जाना चाहिए कि वह अपने खाने पहनने कि जरुरतें पूरी कर सके। गांधीजी ने इसमें स्वावलंबन और सहयोग की बात को भी दर्शाया है। गांधीजी ग्रामस्वराज में समानता की बात भी करते हैं ।वो कहते हैं कि मै ऐसी स्थिति लाना चाहता हु ,जिसमें सबका सामाजिक दर्जा सामान हो।

10) ग्रामस्वराज्य:

विनोबा भावे लिखित 'ग्रामस्वराज्य' में विनोबा ग्रामस्वराज्य और गाँवों के महत्व को दर्शाते है। वो कहते है कि ग्रामस्वराज्य एक दृष्टी से सनातन विचार है , क्योंकि न केवल भारत में बल्कि दुनियां के इतिहास-संस्कृति-परंपरा में उसकी जड़े है। विनोबाजी भी गाँव-गाँव में स्वराज्य की बात करते है और उसमे पुरानी ग्राम व्यवस्था की बात कहते हुए बताते है कि गाँव-गाँव में ग्राम पंचायते थी। गाँव का सारा कारोबार ग्रामपंचायत देखती थी।

विनोबाजी ने यहाँ ग्रामदान की भी बात कही है उसी के सन्दर्भ में तो भावेजी ने 'भूदान अन्दोलन' चलाया था। वो कहते है कि ग्रामदान ही ग्रामस्वराज्य की बुनियाद है। ग्रामदान का अर्थ है सब लोग स्नेह से मिलकर जियो और सारे गाँव को एक परिवार बनाओ। आपका प्रेम गाँव के भाइयों को मिले और उनका आपको। भावे जी कहते हैं कि सामूहिक जीवन जीने के लिए लोगों को प्रवृत करना सबके पास देने की चीज है । अपने पास जो कुछ है ,उसे समाज को समर्पित करने की भावना का ही नाम 'ग्रामस्वराज्य'है।

09) गांधीजी और ग्राम स्वराज के मायने;

नीरज कुमार उपाध्याय जी ने 'गांधीजी और ग्राम स्वराज के मायने' इस विषय पर अपने लेख में लिखते है कि स्वतन्त्रता आंदोलन में अनेक विरोनें अपनी प्राण की आहुति देकर देश को स्वतंत्र कराया। ग्रामस्वराज, स्वरोजगार, छुआ-छूत विहीन भारत, अखंड भारत, औद्योगीकरण , एक देश एक विधान और एक पताका आदि

अनेकों स्वप्न थे जो गांधीजी, सुभास बोस, श्यामा प्रसाद मुखर्जी, प॰ नेहरू, सावरकर,आझाद, भगत सिंह अनेक स्वतंत्र विरोनें स्वतंत्र भारत के भविष्य को सुदृढ़ और अखंड भारत के सपने देखे थे। अफ्रीका से लौटने के बाद गांधीजी ने भारतीय समाज का मानसिक अध्ययन किया। स्वावलंबन, ग्रामस्वराज, शिक्षा, स्वदेशी,संस्कृति, कृषि और कानून को भारतीय परिप्रेक्ष्य में और भारत के लोगों के हित में लागू करने की लड़ाई गांधीजी ने अंतिम दम तक लड़ी। चरखा पीआर सूट काटकर खड़ी के कपड़े पहनने का उनका आवाहन गाँव- गाँव तक पहुंचा। इसके द्वार गांधीजी ने लोगो में स्वाभिमान और स्वावलंबन का बीजारोपन किया। गाँव मजबूत होंगे, देश मजबूत होगा ऐसा उनका चिंतन था।

http://wwwlpravaktalcom/gandhiji-aur-gram-swarajya-ke-mayane/

24 अक्तूबर 2013

10)मनरेगा , पंचायती राज एवं जनजातीय विकास:

प्रस्तुत पुस्तक माधव प्रसाद गुप्ता जी द्वारा रचित है। भारत में पंचायती राज एक ऐसी व्यवस्था है , जिसके अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में जनता द्वारा अपने सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक विकास के दायित्वों का निर्वहन किया जाता है। इस व्यवस्था में यह मान्यता है कि समाज के सभी वर्गों के लोग स्थानीय स्वशासन तथा निर्णय-निर्माण प्रक्रिया में सक्रिय रूप से अपनी सहभागिता प्रदान कर समाज का सर्वांगीण विकास कर सके।

11) राजीव गांधी और पंचायत राज:

जगदीश पीयूष द्वारा लिखित यह पुस्तक राजीव गांधी और पंचायत राज पर एक सुनियोजित पुस्तक है। संविधान सम्मत पंचायती राज कि स्थापना का निर्णायक योगदान राजीव गांधी के खाते में जाता है। दिसंबर 1984 में चुनाव जीतने के बाद उन्होंने राष्ट्र के नाम जो संदेश प्रसारित किया था, उसमे पंचायती राज की उत्पत्ति के बीज थे। राजीव गांधी ने सरकार को जनता तक पहुचाया। सत्ता का विकेंद्रीकरण कर पचायत राज प्रणाली को लागू किया। स्थानीय निकायों को प्रभावशाली बनाया। पंचायात राज अधिनियम बनाने , उसे पारित करने और ग्राम स्तर पर उसे सवार कर स्थापित करने के पूरे करने के कार्यक्रमों को चलाया।

12)Adarsha Gram (Hivare Bazar) Documentary by Lok Sabha TV

आदर्श ग्राम हिवरेबाजार पर किए गए लोकसभा टीवी की डोक्यूमेंट्री में दिखाया गया कि हिवरेबाजार में कदम रखते ही सपनों के भारत का दर्शन होता है। यहाँ सत्ता सरकार द्वारा नहीं तो गाँव की जनता द्वारा संचालित होती है। जिसमें कोई गंदगी नहीं, शराब का कोई नामों निशान नहीं, शिक्षा से कोई वंचित नहीं, पानी की कोई कमी नहीं, कोई परिवार गरीबी रेखा नीचे नहीं। सामाजिक और आर्थिक तौर पर मजबूत गाँव ऐसा गांधी के सपनों का भारत यहाँ दर्शाया गया है।

https://www.youtube.com/watch?v=Ds1QXgJSD3A

Aadarsh Gram : Hiware Bazar (Producer - Suraj Mohan Jha)

Published on Mar 28, 2016

13) 54 करोड़पतियों का गांव: हिवरे बाजार

Source: सीएसई

प्रस्तुत लेख नेहा रखुजा ने हिवारेबाजार का भ्रमण करने के बाद लिखा है । नेहा रखुजा ने खासतौर पर उसमें सुंदरबाई गायकवाड की भी बात कही है जो गाँव की बाधली वजह से गाव छोड़कर मुंबई चली गयी थी, जो अब अपने गाँव की समृद्धि को देखकर वापिस आती है। ऐसे ही अन्य परिवार भी अपने गाव लौटकर आए है। जो गाँव अब देश के सबसे समृद्ध गावों मे गिना जाता है।

http://hindi.indiawaterportal.org/content/54-करोड़पतियों-का-गांव:-हिवरे-बाजार

14)गर्मी में जल उत्सव मनाया हिवरे बाजार ने……

2012 में नवभारत टाइम्स की रिपोर्ट में भी हिवरेबाजार गाँव की जलसंपन्ता लिखी गयी थी। बरसात का पानी रोकने के उपाय किए गए, वॉटर शेड और चेक डैम बनने से गांव में भूस्खलन रुक गया और जमीन में पानी रिसने से कुओं में जलस्तर ऊपर आ गया। सालों तक लगातार श्रमदान, ग्रामीणों में कमाल की एकता, नो पॉलिटिक्स, सरकारी पैसे का सही इस्तेमाल और पानी के जबर्दस्त मैनेजमेंट ने हिरवे बाजार को ग्राम विकास की असाधारण मिसाल बना दिया है।

http://navbharattimes।indiatimes।com/metro/mumbai/other-news/hivre-celebrated-summer-water-market/articleshow/13855281।cms

Updated: Jun 6, 2012, 09:00AM IST

15) हिवरे बाजार:

संपन्न हिवरेबाजार गाँव की यह जानकारी विकिपीडिया से ली गयी है। अहमदनगर जिले के इस गाँव को ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है जो महाराष्ट्र के महान राजा शिवाजी राजा से जुड़ी है। यह हिवारेबाजार गाँव शिवाजी राजा के अधिकारक्षेत्र के जुन्नर परगाना का आखरी भाग था जहाँ हाती, घोड़ों की खरीदी की जाती थी। जिस गाँव में दूध भरपुर मात्रा मे निकलता था और जहाँ पट्टी के पहलवान निर्माण होते थे। लेकिन 1972 का अकाल पड़ा और गाँव बदहाली से जूझने लग। लेकिन 1989 से जब गाँव मे एक अच्छे नेतृत्व पोपटराव पवार के प्रयासों से गाँव का विकास होने लगा। इस गाँव को लोसहभाग और श्रम के आधार पर गाँव में जलसंरक्षण कार्य किया गया जिसे इस ग्राम को 2009 को प्रतिष्ठित वसंतराव नाईक सामाईक पुरस्कार मिला।

https://mr।wikipedia।org/wiki/हीवरे-बाजार

17 मार्च 2016, समय 21:17

16) महाराष्ट्र के इस गांव ने सूखे को दी शिकस्त, मोदी भी हो गए मुरीद

इंडिया न्यूज़ 2016 की रिपोर्ट में बताया गया है की जिस समय देश में या जिस राज्य का वो गाँव जिसमें पूरे गाँव सूखे की चपेट में होने की बावजूद हिवारेबाजार गाँव जहाँ पानी की कोई कमी नहीं है। हिवारेबजर के तरक्की के बारे में प्रधानमंत्री नेरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' मे काही थी। पीएम ने अपने कार्यक्रम में कहा था कि, " हिवरे बाजार ग्राम पंचायत और वहां के गांववालों ने पानी के बहुत बड़े संवेदनशील मुद्दे को बड़े रूप में देखा। जल संचय की इच्छा करने वाले कई गांव मिल जाते हैं लेकिन यहां तो किसानों के साथ बातचीत करके पूरा क्रॉपिंग पैटर्न ही बदल दिया गया।" पूरे गाँव में जल संरक्षण करके पानी स्तर बढ़ाया गया जिसे हिवारेबाजार गाँव पानी में समृद्ध हो गया। http://hindi.news18.com/news/city-khabrain/hiware-bazar-the-village-with-water-miracle-in-ahmednagar-maharashtra-473911.html

Updated: April 28, 2016, 8:36 AM IST

17) हिवरे बाज़ार – एक आदर्श ग्राम:

आजाद गुरुकुल की इस लेख में कहा गया है कि जिन सरकारी लोगों से सरकार खुश नहीं होती थी उनको परेशान करने के लिए तबादला इस हिवारेबाजार गाँव में किया जाता था। झगडे, मारपीट, शराब, गंदगी, अशिक्षा, बेरोजगारी अपने चरम पर थी। ऐसे में शिक्षित नौजवान पोपट राव पवार ने जो क्रिक्रेट खेलते थे उन्होंने अपने दोस्तों से गाँव की स्थित की चर्चा की। उससे यह तय किया गया की गाँव के लोगों कों एक करके, उनके सहयोग से गाँव का नक्शा, स्थिति को बदलने का प्रयास किया गया । श्रम के सहयोग से गाँव का चेहरा-मोहरा बादल गया और गाँव को आदर्श स्वरूप प्रपट हो गया।

http://azadgurukul.in/हिवरे-बाजार -एक-आदर्श-ग्रा/

सप्टेंबर 7 , 2016

18) हिरवेगार हिवरे बाजार:

नवशक्ति के संपादकीय में हिवारेबाजार गाँव के संपन्ता की विषय मे दर्शाया गया कि, जो गाँव कभी अकाल से लटपट रहता था, वो गाँव आज हरियाली से सजा हुआ है जिस समय महाराष्ट्र में अकाल का समय चल रहा है। अहमदनगर के पारनेर तहसील से 10 km दूर 976 हेक्टर मे बसा हिवारेबाजार गाँव अपने आप में एक मिसाल बना है। हिवारेबाजार गाँव की भयावह स्थिति को बदलने केलिए उस गाँव का नौजवान अपने जिद से जाग उठा। उसने गाँव के हर एक नागरिक को अपने साथ में लिया, विकास की पंचसूत्री अपनाकर, गाँव का सर्वोच्च विकास किया। http://navshaktilcolin/aisee-akshare/64945/

19)गाडगेबाबा ग्रामस्वच्छता अभियान में हिवरे बाजार ग्रामपंचायत प्रथम

महाराष्ट्र शासन द्वारा दिया जानेवाला 2006-07 का 'संत गाडगे बाबा ग्रामस्वच्छता अभियान "पुरस्कार हिवारेबाजार ग्राम को मिला। जिसे हिवारेबाजार ग्राम की स्वच्छता को दर्शाता है। http://dailynewsservicelblogspotlin/2008/08/blog-post_4895lhtml

प्रस्तुतकर्ता India Net News पर 6:24 am

शनिवार, 16 अगस्त 2008

20) हिवरे बाजार जलव्यवस्थापनाचे आदर्श मॉडेल -राज्यपाल सी। विद्यासागर राव:

राज्य के शास्वत विकास के लिए हर नागरिक का योगदान महत्वपूर्ण है। पानी के हर बूंद का संवर्धन, पानलोटक्षेत्र विकास, जलयुक्त शिवर योजना, वनीकरण मोहीम इससे भूजल का स्तर बढ़ाने में सहायता मिली। परिणाम यह हुआ की भूजल स्तर बढ गया और हिवारेबाजार गाँव जलसंवर्धन, जलव्यवस्थापन का आदर्श मॉडेल बन गया। http://wwwlahmednagarlive24lcom/2016/06/blog-post_61lhtml

शोध के उद्देश्य :

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध का मुख्य उद्देश्य ग्रामस्वराज्य की अवधारणा और हिवरे बाजार का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन करते समय गाँधी जी की ग्रामस्वराज्य की अवधारना का हिवरे बाजार का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। ग्रामस्वराज्य में जिस ग्राम की कल्पना गांधीजी ने की थी वही ग्राम हिवरे बाजार में परिपूर्ण हुआ है इसका अध्यन किया गया है।

- ग्रामस्वराज्य की अवधारणा और हिवरे बाजार का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना
- हिवरे बाजार में ग्रामस्वराज्य के अवधारणा की वास्तविक स्थिति का अध्ययन करना।
- हिवरे बाजार और ग्रामस्वराज्य की अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन करना ।
- हिवरे बाजार के निवासियों की सामाजिक स्थिति तथा उनका रहन-सहन गाँधी के ग्राम स्वराज्य के अनुरूप है या नहीं इसका अध्ययन करना।

शोध का महत्व:

प्रस्तुत शोध कार्य "ग्राम स्वराज्य की अवधारणा और हिवरे बाजार एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" है। ग्रामों के विकास के लिए ग्राम स्वराज्य की अवधारणा की बात की गई है। भारत में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था है और यहाँ सत्ता का विकेंद्रिकरण हुआ है। सत्ता के विकेंद्रीकरण में सत्ता वहाँ की स्थानिक जनता के द्वारा चलाई जाती है। ग्राम स्वराज्य की बात गांधीजी ने अपने ग्राम स्वराज्य की अवधारणा में की है। यही ग्रामस्वराज्य की अवधारणा को समझना है।

ग्रामस्वराज्य की अवधारणा को हिवरे बाजार की स्थिति से जोड़कर ये पता चलेगा कि ग्रामस्वराज्य की अवधारना या गाँधी जी ने जिस ग्राम स्वराज्य की कल्पना की है वह ग्रामस्वराज्य वास्तविक स्थिति में परिपूर्ण हो पाता है या नहीं। अगर होता है तो उसका विकास उसी ढाँचे में हुआ है क्या इसकी जानकारी मिलेगी। उस ग्राम स्वराज्य की अवधारणा का या उस हिवरे बाजार ग्राम का आदर्श लेकर आज की स्थिति की जिन गाँवों की

वास्तविक स्थिति ठीक नहीं है वह गाँव इस गाँव का आदर्श अपने गाँव के सामने रख सकते है। इसलिए यह शोध महत्वपूर्ण है।

शोध प्रविधि:

किसी भी शोध अध्ययन में प्रयोग की गयी प्रविधि एवं उसका अनुशासित संचालन उस शोध अध्ययन की आत्मा होता है प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक तथा तुलनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। इसके अलावा अवलोकन भी किया गया है। इस शोध में ग्रामस्वराज्य की अवधारणा और हिवरे बाजार गाँव का वर्णन करके तुलना की गयी है। इस शोध में विश्लेषनात्मक अध्ययन किया गया है।